छठी शताब्दी ईसा पूर्व एक परिवर्तनकारी काल :-

- प्रारंभिक भारतीय इतिहास में छठी सदी ई . पू . को एक अहम बदलावकारी काल मानते है । इसका कारण आरंभिक राज्यों व नगरों का विकास , लोहे के बढ़ते प्रयोग और सिक्कों का प्रचलन है ।
- इसी समय में बौद्ध तथा जैन सहित भिन्न - भिन्न दार्शनिक विचारधाराओं का विकास हुआ ।
- बौद्ध एवं जैन धर्म के प्रारंभिक ग्रंथों में महाजनपद नाम से सोलह राज्यों का जिक्र मिलता है ।
- छठी शताब्दी ईसा पूर्व कृषि के लिए परिवर्तन काल माना गया है ।
- इस काल मे लोहे के हल का प्रयोग हुआ→कठोर जमीन को जोतना आसान हुआ ।
- इस काल में धान के पौधे का रोपण शुरू हुआ → फसलो की उपज बढ़ गई ।

जनपद और महाजनपद :-

ऋग्वेदिक युग मे राज्यो को जन कहा जाता था । तथा उत्तरवैदिक युग में राज्य को जनपद कहा जाता था ।

6 वीं शताब्दी ईसा पूर्व → राजनीतिक क्षितिज पर जिन विनिन्न राज्यों का असतित्व दिखाई देता था उन्हें महाजनपद की संज्ञा दी गई है ।

Download MISSION GYAN App Now from Play Store

इस समय के विभिन्न महाजनपदों का उल्लेख बौद्ध ग्रंथ के अगुन्तर निकाय एव जैन धर्म के ग्रंथ भगवतिसूत्र में हुआ है

बौद्ध एवं जैन धर्म के प्रारंभिक ग्रंथों में महाजनपद नाम से सोलह राज्यों का जिक्र मिलता है । विशेषताएं निम्न है :

- अधिकांश महाजनपदों पर राजा का शासन था ।
- लेकिन गण और संघ के नाम के राज्यों में लोगे का समूह शासन करता था
- हर जनपद की राजधानी होती थी जिसे किल्ले से घेरा जाता था ।
- के लिए अधिक धन की जरूरत थी ।
- शासक किसानों और व्यपारियो से कर वसूलते थे ।
- ऐसा हो सकता है कि पड़ोसी राज्यों को लूट कर धन इकटा किया जाता हो
- धीरे – धीर कुछ राज्य स्थाई सेना और नोकरशाही रखने लगे ।

गण एव संघ :-

गण – गण शब्द का प्रयोग कई सदस्य वाले समूह के लिए किया जाता था ।

संघ – संघ शब्द का प्रयोग किसी संगठन या सभा के लिए किया जाता हैं ।

गण या संघ में कई शासक होते हैं कभी – कभी लोग एक साथ शासन करते थे । सभाओं में वाद – विवाद के जरिए निर्णय लिया जाता था । गणो की सभाओं में स्त्रियों , दसो , कम्पकारो की भागीदारी नही थी । इसलिए इन्हें लोकतन्त्र नही माना जाता ।

भगवान बुद्ध और भगवान महावीर दोनो इन्ही गणो से सम्बंधित थे । वज्जि संघ की ही भांति कुछ राज्यो में भूमि सहित अनेक आर्थिक स्रोतों पर राजा गणसामुहिक नियंत्रण रखते थे ।

मगध महाजनपद :-

Download MISSION GYAN App Now from Play Store

मगध आधुनिक बिहार राज्य में स्थित है । मगध छठी से चौथी शताब्दी ई. पूर्व में सबसे शक्तिशाली महाजनपद बन गया था ।

प्रारंभ में राजगृह मगध की राजधानी थी । पहाड़ियों के बीच बसा राजगृह एक किलेबंद शहर था । बाद में ५ वीं शताब्दी ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र (पटना) को राजधानी बताया ।

मगध महाजनपद इतना समृद्ध क्यों था और शक्तिशाली महाजनपद बनने के कारण क्या थे ?

- ये प्राकृतिक रूप से सुरक्षित था, पहाड़िया थी (प्राकृतिक रूप से इसकी रक्षा करती थी)
- यहाँ उपजाऊ भूमि थी (गंगा और सोन नदी) जिससे व्यापार में वृद्धि होती थी ।
- जनसंख्या
  - जंगली हाथी की उपलब्धता (सेना)
- योग्य तथा महत्वकांक्षी शासक तथा उनकी नीतियों (बिंबिसार , आजातशत्रु ओर महापदमनन्द)
  - लोहे की खदानें → सेना के लिए हथियार

एक आरंभिक सम्राज्य (मौर्य साम्राज्य) 321-185 BC :-

मगध के विकास के साथ – साथ मौर्य सम्राज्य का उदय हुआ ।

मौर्य साम्राज्य की स्थापना चंद्र गुप्त मौर्य ने (321 ई . पू) में की थी जो कि पश्चिम में अफगानिस्तान और बलूचिस्तान तक फैला था ।

चन्द्रगुप्त मौर्य :-

Download MISSION GYAN App Now from Play Store

चंद्रगुप्त मौर्य (Chandragupta Maurya) का जन्म 340 ईसवी पूर्व में पटना के बिहार जिले में हुआ था। भारत के प्रथम हिन्दू सम्राट थे। इन्होंने मौर्य साम्राज्य की स्थापना की थी। चंद्रगुप्त मौर्य के गुरु (विष्णुगुप्त ,कौटिल्य , चाणक्य) थे ।

मौर्य वंश के बारे में जानकारी के स्रोत :-

मूर्तिकला

समकालीन रचनाएँ मेगस्थनीज द्वारा लिखत इंडिका पुस्तक : चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में आए यूनानी राजदूत मंत्री द्वारा लिखी गई पुस्तक से जानकारी मिली है

अर्थशास्त्र पुस्तक (चाणक्य द्वारा लिखित) : इसके कुछ भागो की रचना कौटिल्य या चाणक्य ने की थी इस पुस्तक से मौर्य शासकों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है ।

जैन , बोद्ध , पौराणिक ग्रंथों से : जैन ग्रंथ बौद्ध ग्रंथ पौराणिक ग्रंथों तथा और भी कई प्रकार के ग्रंथों से मौर्य साम्राज्य के बारे में जानकारी मिलती है।

अशोक के स्तमभो से : अशोक द्वारा लिखवाए गए स्तंभों से भी मौर्य साम्राज्य के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है ।

अशोक पहला सम्राट था जिसने अधिकारियों ओर प्रजा के लिए संदेश प्रकृतिक पत्थरो ओर पॉलिश किये हुए स्तम्भों पर लिखवाए थे ।

मौर्य साम्राज्य में प्रशासन :-

मौर्य साम्राज्य के पाँच प्रमुख राजनीतिक केंद्र थे ।

राजधानी - **पाटलिपुत्र और चार प्रांतीय केंद्र -**

- **तक्षशिला ,**
- **उज्जयिनी ,**

Download MISSION GYAN App Now from Play Store

- **तोसलि ,**
- **सुवर्णगिरी**

इन सब का उल्लेख अशोक के अभिलेखो में किया जाता है ।

पश्चिम मे पाक से आंध्र प्रदेश , उड़ीसा और उत्तराखण्ड तक हर स्थान पर एक जैसे संदेश उत्कीर्ण किर गए थे ।

ऐसा माना जाता है इस साम्राज्य में हर जगह एक समान प्रशासनिक व्यवस्था नहीं रही होगी क्योकि अफगानिस्तान का पहाड़ी इलाका दूसरी तरफ उडीसा तटवर्ती क्षेत्र ।

तक्षशिला और उज्जयिनी दोनो लंबी दूरी वाले महत्वपूर्ण व्यापार मार्ग थे ।

सुवर्णगिरी (सोने का पहाड़) कर्नाटक में सोने की खाने थी ।

साम्राज्य के संचालन में भूमि और नदियों दोनों मार्गो से आवागमन बना रहना आवश्यक था । राजधानी से प्रांतो तक जाने में कई सप्ताह या महीने का समय लगता होगा ।

सेना व्यवस्था :-

मेगास्थनीज़ के अनुसार मौर्य साम्राज्य में सेना के संचालन के लिए । समिति और 6 उप्समीतियाँ थी ।

- 1 . नौसेना का संचालन करना ।
- 2 . दूसरी का काम यातायात व खान पान का संचालन करना ।
- 3 . तीसरी का काम पैदल सैनिकों का संचालन करना ।
- 4 . चौथी का काम अश्वरोही का संचालन करना ।
- 5 . पाँचवी का काम रथारोही का संचालन करना ।

Download MISSION GYAN App Now from Play Store

- 6 . छठवी का काम हथियारो का संचालन करना ।

अन्य उपसमितियां :-

दूसरी उपसमिति का दायित्व विभिन्न प्रकार का था । जैसे :-

- उपकरणो को ढोने के लिए बैलगाड़ियो की व्यवस्था करना
- सैनिको के लिए भोजन की व्यवस्था करना ।
- जानवरो के लिए चारे की व्यवस्था करना ।
- तथा सैनिको की देखभाल करने के लिए सेवको और शिल्पकारों की नियुक्ति करना ।

मेगस्थनीज :-

- मेगस्थनीज यूनान का राजदूत और एक महान इतिहासकार था ।
- मेगस्थनीज ने एक पुस्तक लिखी थी जिसका नाम इंडिका था , इस पुस्तक से हमें मौर्य साम्राज्य की जानकारी मिलती है ।
- मेगस्थनीज ने बताया की मौर्य साम्राज्य में सेना के संचालन के लिए । समिति और 6 उप्समीतियाँ थी ।

सम्राट अशोक :-

अशोक की पहचान 1830 ई० के दशक में हुई । जब ईस्ट इंडिया कंपनी के एक अधिकारी जेम्स प्रिंसेप ने ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों का अर्थ निकाला । अशोक के अभिलेख प्राकृत में हैं । जबकि पश्चिमोत्तर से मिले आरमाइक और यूनानी भाषा मे हैं ।

❖ प्राकृत के आधिकांश अभिलेख ब्राहमी लिपि में लिखे गए थे जबकि पश्चिमोत्तर के कुछ अभिलेख खरोष्ठी में लिखे गए । अरामाइक और यूनानी लिपियों का प्रयोग अफगानिस्तान में मिले अभिलेखों में किया गया

Download MISSION GYAN App Now from Play Store

था । इन लिपियो का उपयोग सबसे आरंभिक अभिलेखों और सिक्को में किया गया है ।

प्रिंसेप को पता चलता है की अब अधिकांश अभिलेखो और सिक्को पर प्रियदस्सी यानी मनोहर मुखाकृति वाले राजा का नाम लिखा है । कुछ अभिलेखो पर राजा का नाम अशोक भी लिखा है ।

कलिंग के युद्ध (261 ईसा पूर्व)→ युद्ध का परित्याग → धम्म विजय की नीति को अभिलेखों पर खुदवाया ताकि उसके वंशज भी युद्ध न करे ।

ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपि का अर्थ :-

खरोष्ठी लिपि को कैसे पढ़ा गया ?

- पश्चिमोत्तर से पाए गए अभिलेखों में खरोष्ठी लिपि का प्रयोग किया गया था ।
- इस क्षेत्र में हिन्दू – यूनानी शासक शासन करते थे और उनके द्वारा बनवाये गए सिक्को से खरोष्ठी लिपि के बारे में जानकारी मिलती है ।
- उनके द्वारा बनवाये गए सिक्कों में राजाओं के नाम यूनानी और खरोष्ठी में लिखे गए थे ।
- यूनानी भाषा पढने वाले यूरोपीय विद्वानों में अक्षरों का मेल किया ।

ब्राह्मी लिपि को कैसे पढ़ा गया ?

- 18वीं सदी में यूरोपीय विद्वानों ने भारत के पंडितों की मदद से बंगाली और देवनागरी लिपि में बहुत सारी पांडुलिपियाँ पढ़ी और अक्षरों को प्राचीन अक्षरों से मेल करने का प्रयास किया ।

Download MISSION GYAN App Now from Play Store

- कई दशकों बाद जेम्स प्रिंसप में अशोक के समय की ब्राह्मी लिपि का 1838 ई . में अर्थ निकाला ।

सिक्के किस प्रकार के होते थे ?

- व्यापार करने के लिए सिक्कों का प्रयोग किया जाता था ।
- चांदी और तांबे के आहत सिक्के (6वी शताब्दी ई . पू) सबसे पहले प्रयोग किये गए ।
- सिक्कों को राजा ने जारी किया था या ऐसा भी हो सकता है की कुछ अमीर व्यापारियों ने सिक्को को जारी किया हो ।
- शासकों के नाम और चित्र के साथ सबसे पहले सिक्के हिन्दू यूनानी शासकों ने जारी किये थे ।
- सोने के सिक्के सबसे पहले कुषाण राजाओं ने जारी किये थे , और इन सिक्कों का वजन और आकर उस समय के रोमन सिक्कों के जैसा ही हुआ करता था ।
- पंजाब और हरियाणा जैसे क्षेत्रों में यौधेय शासकों ने तांबे के सिक्के जारी किये थेजों की हजारों की संख्या में वहाँ से मिले हैं ।
- सोने के सबसे बेहतरीन सिक्के गुप्त शासकों ने जारी किए थे ।

कलिंग का युद्ध :-

अशोक के राज्यारोहण के 8 बर्ष पश्चात अर्थात 261 ई० पू० में अशोक का कलिंग से युद्ध हुआ । प्लिनी के अनुसार अशोक के राज्याभिषेक के बाद कि यह घटना है । प्लिनी के अनुसार कलिंग की सेना में 60,000 पैदल 1000 घुड़सवार 700 हाथी थे ।

अशोक का राजत्व सिद्धांत :-

Download MISSION GYAN App Now from Play Store

कलिंग युद्ध के पश्चात अशोक ने शांति व मैत्री की नीति अपनाई । इसके बाद अशोक ने दो आदेश जारी किए जो धौली और जोगढ़ नामक स्थान पर सुरक्षित है । इन आदेशों में लिखा गया है सम्राट अशोक का आदेश है कि प्रजा के साथ पुत्रवत व्यवहार हो जनता को प्यार किया जाए । अकारण लोगो को कारावाश का दण्ड या यातना न दी जाए । जनता के साथ न्याय किया जाना चाहिये ।

धम्म से अभिप्राय?

धम्म एक नियमावली अशोक ने अपने अभिलेखो के माध्यम से धम्म का प्रचार किया ।

अशोक का धम्म :-

- इसमें बड़ों के प्रति आदर ।
- सन्यासियों और ब्रामणो के प्रति उदारता ।
- सेवको और दासों के साथ उदार व्यवहार ।
- दूसरे के धर्मों और परंपराओं का आदर ।
    - धम्म के सिद्धांत साधारण तथा सार्वभौमिक थे ।
    - धम्म के माध्यम से लोगों का जीवन इस संसार में और इसके बाद में संसार में अच्छा रहेगा ।
    - अशोक का व्यतिगत धर्म बौद्ध धर्म था । उसने अपने धर्म को किसी धर्म पर थोपने का प्रयास नही किया । उसने कही भी बौद्ध धर्म के तात्विक सिद्धान्तों , चार अर्थ सत्य या अष्टागिक मार्ग का प्रचार नही किया ।

उसने ऐसे नैतिक सिद्धान्तों का प्रचार किया जो सभी धर्मों को मान्य हो , उसके धर्म के सिद्धान्त व्यवहारिक एव निषेधात्मक दो पहलू थे ।

Download MISSION GYAN App Now from Play Store

अशोक ने धम्म – प्रचार के लिए क्या किया था ?

- *अशोक ने धम्म – प्रचार के लिए एक विशेष अधिकारी वर्ग नियुक्त किया जिसे धम्म महामात्य कहा जाता था (तेरहवें शिलालेख)*
- *अधिकारी अलग – अलग जगहों पर आते – जाते रहते थे*
- *उनको प्रचार कार्य के लिए वेतन दिया जाता था*

क्या मौर्य साम्राज्य महत्वपूर्ण है :-

१ वी शताब्दी मे जब इतिहासकारो में जब भारत के प्रारंभिक इतिहास की रचना करनी शुरू की तो मौर्य साम्राज्य को इतिहास का मुख्य काल माना गया ।

- *अद्भुत कला का साक्ष्य*
- *मूर्तियाँ (सम्राज्य की पहचान)*
- *अभिलेख (दूसरो से अलग)*
- *अशोक एक महान शासक था*
- *मौर्य सम्राज्य 150 वर्ष तक ही चल पाया ।*

दक्षिण के राजा और सरदार :-

दक्षिण भारत में (तमिलनाडु / आंध्रप्रदेश / केरल) में **चोल , चेर एवं पांड्य** *जैसी सरदारियो का उदय हुआ । ये राज्य समृद्ध तथा स्थाई थे ।*

प्राचीन तमिल संगम ग्रन्थों में इसका उल्लेख मिलता हैं ।

सरदार (राजा) लंबी दूरी के व्यपार से राजस्व जुटाते थे (सातवाहन)

सरदार और सरदारी :-

- *सरदार एक ताकतवर व्यक्ति होता हैं जिसका पद वंशानुगत भी हो सकता हैं एवं नहीं भी*

Download MISSION GYAN App Now from Play Store

- उसके समर्थक उसके खानदान के लोग होते हैं ।
- सरदार के कार्यों में विशेष अनुष्ठान का संचालन , युद्ध के समय नेतृत्व करना एवं विवादों को सुलझाने में मध्यस्थता की भूमिका निभाना सम्मिलित है ।
- वह अपने अधीन लोगों से भेंट लेता है (जबकि राजा लगान वसूली करते हैं) , एवं अपने समर्थकों में उस भेंट का वितरण करता है । सरदारी में प्रायः कोई स्थायी सेना अथवा अधिकारी नहीं होते हैं ।

<u>सरदार के कार्य :-</u>

- अनुष्ठान का संचालन
- युद्ध का नेतृत्व करना
- लड़ाई , झगड़े, विवाद को सुलझाना
- सरदार अपने अधीन लोगों से भेंट लेता है
- अपने समर्थकों में उस भेंट को बांट देता है
- सरदारी में कोई स्थाई सेना या अधिकारी नहीं होते
- इन राज्यों के बारे में जानकारी प्राचीन तमिल संगम ग्रंथों से मिलती है
- इन ग्रंथों में सरदारों के बारे में विवरण है
- कई सरदार तथा राजा लंबी दूरी के व्यापार से भी राजस्व इकट्ठा करते थे
- इनमें सातवाहन तथा शक राजा प्रमुख हैं
- सरदार अपने अधीन लोगों से भेंट लेता है अपने समर्थकों में उस भेंट को बांट देता है सरदारी में कोई स्थाई सेना या अधिकारी नहीं होते ।

दैविक राजा :-

Download MISSION GYAN App Now from Play Store

- देवी – देवता की पूजा से राजा उच्च उच्च स्थिति हासिल करते थे । कुषाण – शासक ने ऐसा किया ।
- U. P में मथुरा के पास माट के एक देवस्थान पर कुषाण शासको ने विशाल काय मूर्ति स्थापित की ।
- अफगानिस्तान में भी ऐसा किया इन मूर्तियो के माध्यम से राजा खुद को देवतुल्य पेश करते थे ।

गुप्तकाल :-

भारतीय इतिहास में स्वर्णयुग

गुप्तकाल के शासक :-

- श्रीगुप्त
- घटोत्कच
- चंद्रगुप्त प्रथम
- समुद्रगुप्त
- रामगुप्त
- चंद्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य)
- कुमारगुप्त
- स्कन्दगुप्त

भूमिदान तथा नए सभ्रांत ग्रामीण :-

ई० की आरंभिक शताब्दियों से ही भूमिदान के प्रमाण मिलते हैं । इनमे से कई का उल्लेख अभिलेखों में मिलता है ।

Download MISSION GYAN App Now from Play Store

इनमे से कुछ अभिलेख पत्थरों पर लिखे गये थे लेकिन अधिकांश ताम्रपत्रो पर खुदे होते थे । जिहे संभवतः उन लोगों को प्रमाण रूप मे दिया जाता था । जो भूमिदान लेते थे ।

भूमिदान के जो प्रमाण मिले हैं । वे साधारण तौर पर धार्मिक सस्थाओं या ब्राह्मणो को दिए गए थे । इनमे से कुछ अभिलेख संस्कृत में थे ।

प्रभावतीगुप्त आरंभिक भारत के एक सबसे महत्वपूर्ण शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय (375 – 415 ई.पू) की पुत्री थी । उसका विवाह दक्कन पठार के वाकाटक परिवार मे हुआ जो एक महत्वपूर्ण शासक वंश था ।

संस्कृत धर्मशास्त्रो के अनुसार माहिलाओ को भूमि जैसी संपत्ति पर स्वतंत्र अधिकार नही था लेकिन एक अभिलेख से पता चलता है कि प्रमावति भूमि की स्वामी थी और उसने दान भी किया था इसका कारण यह हो सकता है कि वह एक रानी (आरंभिक भारतीय इतिहास जी ज्ञात कुछ रानियों में से से एक थी) और इसलिए उसका यह उदाहरण ही रहा है । यह भी संभव है कि धर्मशास्त्रो को घर स्थान से पर समान रूप से लागू नही किया जाता हो ।

इतिहासकारो मे भूमिदान का प्रभाव एक महत्वपूर्ण वाद – विवाद का विषय बना हुआ है ।

जनता के बीच राजा की छवी कैसी थी ?

- इसके साक्ष्य ज्यादा नहीं प्राप्त है ।
- जातक कथाओं से इतिहासकारों ने पता लगाने का प्रयास किया ।
- ये कहानियाँ मौखिक थी। फिर बाद में इन्हें पालि भाषा में लिखा गया ।
- गंदतिन्दु जातक कहानी → प्रजा के दुख के बारे में बताया गया ।
- छठी शताब्दी ईस्वी पूर्व से उपज बढ़ाने के तरीके :-

Download MISSION GYAN App Now from Play Store

- उपज बढ़ाने के लिए हल का प्रयोग किया गया
- लोहे की फाल का प्रयोग किया गया यह भी उपज बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था ।
- फसल को बढ़ाने के लिए कृषक समुदाय ने मिलकर सिंचाई के नए नए साधन को बनाना शुरू किया ।
- फसल की उपज बढ़ाने के लिए कई जगह पर तलाब , कुआँ और नहर जैसे सिंचाई साधन को बनाया गया जो की उपज बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था ।

सिक्के और राजा :-

- सिक्के के चलन से व्यापार आसान हो गया ।
- चॉदी । ताँबे के आहत सिक्के प्रयोग में लाए ।
- ये सिक्के खुदाई में मिले है ।
- आहत सिक्के पर प्रतीक चिहन भी थे ।
- सिक्के राजाओं ने जारी किए थे ।
- शासको की प्रतिमा तथा नाम के साथ सबसे पहले सिक्के यूनानी शासको ने जारी किए ।
- सोने के सिक्के सर्वप्रथम कुषाण राजाओ ने जारी किए थे ।
- मूल्यांकन वस्तु के विनिमय में सोने के सिक्के का प्रयोग किया जाता था ।
- दक्षिण भारत मे बड़ी तादात में रोमन सिक्के मील है।
- सोने के सबसे आकर्षक सिक्के गुप्त शासको ने जारी किए ।

<u>अभिलेखों की साध्य सीमा :-</u>

- हल्के ढंग से उत्कीर्ण अक्षर : कुछ अभिलेखों में अक्षर हल्के ढंग से उत्तीर्ण किए जाते हैं जिनसे उन्हें पढ़ना बहुत मुश्किल होता है ।

Download MISSION GYAN App Now from Play Store

- *कुछ अभिलेखों के अक्षर लुप्त : कुछ अभिलेख नष्ट हो गए हैं और कुछ अभिलेखों के अक्षर लुप्त हो चुके हैं जिनकी वजह से उन्हें पढ़ पाना बहुत मुश्किल होता है ।*
- *वास्तविक अर्थ समझने में कठिनाई : कुछ अभिलेखों में शब्दों के वास्तविक अर्थ को समझ पाना पूर्ण रूप से संभव नहीं होता जिसके कारण कठिनाई उत्पन्न होती है ।*
- *अभिलेखों में दैनिक जीवन के कार्य लिखे हुए नहीं होते हैं : अभिलेखों में केवल राजा महाराजा की और मुख्य बातें लिखी हुई होती है जिनसे हमें दैनिक जीवन में आम लोगों के बारे में दैनिक कामों के बारे में पता नहीं चलता ।*
- *अभिलेख बनवाने वाले के विचार : अभिलेख को देखकर यह पता चलता है कि जिसने अभिलेख बनवाया है उसका विचार किस प्रकार से हैं इसके बारे में हमें जानकारी प्राप्त होती है ।*

Download MISSION GYAN App Now from Play Store